शीर्षक: 'मऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में लिंग एवं स्थानीय संस्थाओं के प्रभाव का अध्ययन'

लेखक : 1- खडानन जी भावेश ,शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग
निर्वाण यूनिवर्सिटी जयपुर ।
2- प्रोफेसर डॉक्टर तनु टंडन शिक्षा संकाय
निर्वाण यूनिवर्सिटी जयपुर ।

सारांश: संसार में विद्यमान प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। इसमें समय के साथ परिवर्तन होता रहता है ,यह एक सार्वभौमिक सत्य है। इस जगत में उपस्थित सभी सजीव व निर्जीव वस्तुओं का सृजन एवं विनाश क्रमिक रूप से चलता रहता है अर्थात जिन वस्तुओं की उत्पत्ति हुई है उनका भविष्य में नष्ट होना निश्चित है । सृजनशीलता व्यक्ति की वह योग्यता है जो उसे सामान्य व्यक्तियों से अलग एवं अनुपम बनाती है इस विशेष योग्यता के द्वारा नवीन वस्तुओं का सृजन ,खोज व अविस्कार करने का कार्य संभव हो पाता है। इसकी आवश्यकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होती है। प्रस्तुत शोधपत्र सृजनात्मकता एवं इसके विकास में लिंग तथा संस्थाओं की भूमिका को दर्शाता है। शोध में उत्तर प्रदेश के मऊ जिले के माध्यमिक स्तर के सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के कक्षा बारह के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों को शामिल किया गया है ,इन शहरी व ग्रामीण विद्यालयों मे से कुल 100 छात्रों का साधारण यादृच्छिक न्यायदर्श विधि द्वारा चयन किया गया। जिसमें 50 छात्र ग्रामीण विद्यालयों से तथा 50 छात्र शहरी विद्यालयों से लिए गए। अनुसंधान विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया जबकि न्यायदर्श से आकड़ों का संग्रह प्रख्यात भारतीय मनोवैज्ञानिक बांकर मेहदी के द्वारा निर्मित शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का उपयोग उपकरण के लिए किया गया। परिणाम के लिए शोध से प्राप्त प्रदत्तो का सांख्यिकीय विश्लेषण माध्य ,मानक विचलन तथा टी- परीक्षण द्वारा किया गया और पाया गया कि स्थानीय संस्थाओं व लिंग के आधार पर छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर देखने को मिला इसके साथ ही छात्रों की बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि का छात्रों की सृजनात्मकता पर प्रभाव देखने को मिला। इन्हीं के आधार पर निष्कर्ष बताते हुए महत्वपूर्ण सुझाव भविष्य के लिए प्रस्तुत किए गए हैं।

सूचक शब्द : रचनात्मकता ,सृजनात्मकता ,रचनात्मक चिंतन ,माध्यमिक विद्यालय ,सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड , शहरी एवं ग्रामीण छात्र।

प्रस्तावना :

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में रचनात्मकता शब्द का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता था। किन्तु समय के साथ वर्तमान में रचनात्मकता या सृजनात्मकता शब्द का प्रयोग अधिकतर देखने को मिलता है। विभिन्न

क्षेत्रों के विद्वान रचनात्मकता और इसके महत्व तथा रचनात्मक चिंतन के विकास को लेकर काफी जागरूक हुए हैं। शिक्षा में सृजनात्मकता किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान को लेकर बिल्कुल नवीन विचार है। यह बताता है कि जहां कुछ भी नहीं है वहाँ कुछ प्राप्त करने की योग्यता मात्र नहीं अपितु रचनात्मकता किसी भी क्षेत्र से जुड़ी हुई सभी समस्या के प्रति एक नवीन विचार पस्तुत करना ,किसी वस्तु मे परिवर्तन करना ,सुधार करना आदि की कला है। रचनात्मकता को परिभाषित करना शुरू से ही मनोवैज्ञानिकों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है किन्तु इन अनेक चुनौतियों के बावजूद भी आज के इक्कीसवी सदीं में अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने अथक परिश्रम ,अपने समझ ,विवेक के आधार पर इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। वैसे तो रचनात्मकता की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है किन्तु इस क्षेत्र से जुड़े कुछ विख्यात लेखकों के परिभाषाओ पर विचार करने से ज्ञात होता है कि रचनात्मकता शब्द अपनेआप में काफी जटिलताओं को समाहित किए हुए है। क्योंकि इसके अनेक शाब्दिक अर्थ निकल कर सामने आए हैं। इसके अतिरिक्त रचनात्मकता का संबंध मन की चेतन अवस्था से होता है। जिससे किसी वस्तु का प्रतिबिंब मानसिक पटल पर बनता है।

वान हुक के अनुसार- "रचनात्मकता अंतःवयक्तिक तथा अंतर वयक्तिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मौलिक ,उच्च गुणवक्तायुक्त और महत्वपूर्ण उत्पादों का निर्माण किया जाता है"।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार -

"सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की कला है।"

डिहान और हेविंग हर्स्ट के शब्दों में -

"सृजनात्मकता वह विशेषता है जो किसी व्यक्ति को किसी नवीन रचना एवं नवीन उत्पादन की ओर प्रवृत्त करता है ,जो उस व्यक्ति या पूरे समाज के लिए नवीन हो सकता है।"

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है कि -

"हम समान प्रकार के चिंतन के द्वारा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते है जबतक हम भिन्न रचनात्मक चिंतन का प्रयोग नहीं करते हैं।"

रचनात्मकता वह मानसिक योग्यता है जो जन्मजात होता है जबकि कुछ का मानना है कि इसे उपयुक्त शिक्षण युक्तियों ,एवं क्रियाकलापों के द्वारा ,अनुकूल वातावरण प्रदान कर व्यक्ति के अंदर विकास किया जा सकता है। रचनात्मक चिंतन मस्तिष्क के भीतर उठने वाले विचारों ,कल्पनाओ को प्रस्तुत करने का एक तरीका है जो संसार के किसी व्यक्ति द्वारा उपयोग में न लाया गया हो ,यह मुख्यतः समस्या समाधान के लिए उपयोग में लाया जाता है जैसे - लिंगभेद ,भाषा ,संस्था से जुड़ी समस्या आदि।

रचनात्मक चिंतन मे मुख्य रूप से नवीन निर्माण या मौलिकता शामिल होता है। रचनात्मकता का मुख्य उद्देश्य छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करना तथा विचारों की प्रवाहता को बढ़ावा देना है। कई शोध अध्ययनों में

पाया गया है कि स्थानीय संस्था ,लिंगभेद ,छात्रों के रचनात्मकता के विकास में बेहतर प्रभाव डालते हैं । संबंधित साहित्य से यह भी स्पष्ट हुआ है कि मऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में लिंग एवं स्थानीय संस्थाओ के प्रभाव पर शोध की कमी है । इस शोध अंतराल को पूरा करने तथा तथ्यों को सुर्खियों में लाने के लिए शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन को डिजाइन किया है

आवश्यकता एवं महत्व :

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयी छात्रों शिक्षकों,तथा विद्यालयी प्रशासन आदि से जुड़ी अनेक समस्याए आती रहती है जिनका समय पर समाधान करना नितांत आवश्यक है इसके लिए किए जाने वाले नवीन प्रयास नए खोज व अविस्कार को जन्म देते हैं। जब सामर्थ्य ,बुद्धि ,व्यक्तित्व जैसे लक्षणों पर शोध ,छात्रों की शैक्षिक रचनात्मक चिंतन के संदर्भ में व्यक्तिगत अंतर पैदा करने वाली प्रक्रिया में विफल रहा तो विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओ द्वारा अन्य चरों की खोज शुरू की गई जो व्यक्तिगत रूप से छात्रों के प्रदर्शन में भिन्नता का अनुमान लगा सकते थे। भारतीय दर्शन प्राचीनतम दर्शन में से एक दर्शन है जो धर्म से जुड़ा हुआ है किन्तु पाश्चात्य दर्शन इससे बिल्कुल अलग दर्शन है । भारत जैसे देश में यह विचारधारा चलती आ रही थी कि सृजनात्मकता जन्मजात एवं ईश्वर प्रदत्त होती है । ईश्वर जिस पर जितना कृपालु होता है वह उतना ही अधिक रचनात्मक होता है ।

21 वी सदी वैज्ञानिक युग है । प्राचीनकाल से चली आ रही रचनात्मकता की अवधारणा पर विराम लग चुका है क्योंकि विभिन्न अनुसंधान कार्यों से स्पष्ट हो चुका है की रचनात्मकता को शिक्षा के द्वारा छात्रों मे विकास किया जा सकता है ।

प्रस्तुत शोध के द्वारा ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों में रचनात्मक शक्ति के विकास में सहायता मिलेगी । क्योंकि बच्चे राष्ट्र का भविष्य है इनके सर्वोत्तम विकास के बिना परिवार ,समाज एवं राष्ट्र के विकास की कल्पना नहीं किया जा सकता है । छात्रों की पृष्ठभूमि के साथ उनके लिंगभेद पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे बिना किसी भेदभाव के दोनों की आवश्यकताओ का ध्यान रखकर विकास किया जा सके । अतः छात्रों को प्रत्येक स्तर पर सृजनशीलता के विकास के लिए उचित अवसर प्रदान किया जाना चाहिए । जिससे छात्रों में सृजनात्मकत योग्यता के विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले उन कारकों का पता लगाया जा सके एवं उसका समाधान खोजा जा सके ,इसकी आवश्यकता है ।

वर्तमान समय मे शिक्षा को अस्त्र के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए । सृजनात्मकता एक ऐसा विचार है जिसके माध्यम से छात्रों में उपस्थित मौलिक कल्पनाओ को विकसित किया जाता है । छात्रों में मौलिक अभिव्यक्ति ,चिंतन की दृष्टि से रचनात्मकता बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है इसका शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सर्वत्र सभी क्षेत्रों में महत्व है ,कोई ऐसा कार्य नहीं है जिसमे सृजनात्मकता का महत्व न हो । यह जिस छात्र में जितनी विद्यमान होगी वह उतना ही सृजनशील होगा । इसके द्वारा छात्र

विद्यालयी जीवन में शिक्षा से जुड़ी विभिन्न समस्याओ को नवीनतम तरीके से समाधान करने के अतिरिक्त अपने दैनिक जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्याओ का मौलिक समाधान खोजने मे दक्ष होंगे । वर्तमान शोध से न केवल छात्रों, शिक्षकों ,शिक्षण संस्थाओ ,प्रशासकों को बल्कि शैक्षिक योजनाकारों को भविष्य के लिए रचनात्मकता के विकास हेतु मार्गदर्शन प्राप्त होगा ।

अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन के लिए शोधार्थी के द्वारा निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किए गए -

1. शहरी माध्यमिक विद्यालय के बालकों की रचनात्मक चिंतन के विकास पर स्थानीय संस्थाओं के प्रभाव का पता लगाना ।
2. शहरी माध्यमिक विद्यालय के बालिकाओं की रचनात्मक चिंतन के विकास पर स्थानीय संस्थाओं के प्रभाव का पता लगाना ।
3. ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के बालकों की रचनात्मक चिंतन के विकास पर स्थानीय संस्थाओं के प्रभाव का पता लगाना ।
4. ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के बालिकाओं की रचनात्मक चिंतन के विकास पर स्थानीय संस्थाओं के प्रभाव का पता लगाना ।
5. शहरी माध्यमिक विद्यालय के बालकों एवं बालिकाओं की रचनात्मक चिंतन के विकास पर लिंगभेद के प्रभाव का पता लगाना ।
6. ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के बालकों एवं बालिकाओं की रचनात्मक चिंतन के विकास पर लिंगभेद के प्रभाव का पता लगाना ।
7. शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के रचनात्मकता के विकास पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का पता लगाना ।

शोध परिकल्पना : अध्ययन के लिए निम्न शून्य परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया-

- 1 - स्थानीय संस्थाओं के आधार पर शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।
- 2 - लैंगिक विभेद के आधार पर शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

- ❖ 3 - शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा :

प्रस्तुत शोधपत्र मे संबंधित साहित्य की समीक्षा करने पर पाया गया की रचनात्मक चिंतन के संबंध में जो भी शोध कार्य प्रकाश में आए है उनमें मऊ जिले के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में स्थानीय संस्था ,लिंगभेद ,शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन पर शोध की कमी है अतः इसपर शोध कार्य किया गया है।

मान ,जी0 एस0. (1978) ने "सृजनात्मक तथा असृजनात्मक विद्यार्थियों में मूल्य ,आदर्शों का अध्ययन करना"विषय पर शोष कार्य किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हिन्दू और मुस्लिम विद्यार्थियों के उच्च और निम्न रचनात्मकता के बीच अंतर का पता लगाना।

लड़के व लड़कियों के बीच उच्च एवं निम्न रचनात्मकता में सार्थक अंतर का पता लगाना था।

न्यायदर्श के रूप मे इन्टर के लड़के व लड़कियों को लिया और इन्हें चार भागों मे बाटा। इस अध्ययन में मापन के लिए बाँकर मेहदी के शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि उच्च एवं निम्न रचनात्मकता ,व्यक्तियों के मूल्यों के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया।

बरार ,एस0 एस0 .(1991). ने "विद्यालयी छात्रों में वृद्धि के आधार पर रचनात्मकता के विकास का अध्ययन" विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 13 से 19 वर्ष के छात्रों मे सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन करना तथा उच्च ,सामान्य व निम्न बौद्धिक समूह के मध्य बौद्धिक सृजनात्मकता का अंतर ज्ञात करना।

इसके लिए 630 छात्रों को न्यायदर्श के रूप में चयन किया तथा परीक्षण से प्राप्त आकड़ों के विश्लेषण के परिणामों मे पाया गया कि छात्रों में वृद्धि के साथ साथ छात्रों के समूह में सृजनात्मकता को मापने योग्य विकास का स्तर पाया गया।

गौतम,शशि.(1992) ने "नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन तथा नेतृत्व की भावना का विकास के विषय मे अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन तथा नेतृत्व की भावना के विकास के लिए अपनाए जा रहे तरीके का पता लगाना था। इसके लिए कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों का रैंडम विधि द्वारा चयन किया गया ,उपकरण के रूप में परीक्षण मापनी प्रश्नावली का प्रयोग किया। निष्कर्ष में पाया गया कि विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन सार्थक है तथा कक्षा 6,7,8,के विद्यार्थियों में विकास भी सार्थक रूप से पाया गया।

श्री अस्तुतिक,सुदार्ति., नुराइनी, लैलातुल.(2017) ने "
माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए वैज्ञानिक रचनात्मकता कौशल में सुधार के लिए वैज्ञानिक रचनात्मकता परीक्षण का विकास करना' विषय पर शोधकार्य किया । इस शोध में इंडोनेशिया के माध्यमिक विद्यालय से 140 न्यायदर्श का चयन करके अध्ययन किया है और पाया कि वैज्ञानिक रचनात्मक परीक्षण का उपयोग ,वैज्ञानिक रचनात्मक कौशल का अभ्यास करने हेतु सक्षम बनाया। तथा वैज्ञानिक रचनात्मकता परीक्षण वैज्ञानिक रचनात्मकता कौशल में सुधार करने में प्रभावी रहा ।

एन0 सी0,किरण. (2017). ने "केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय के छात्रों के मध्य सृजनात्मकता का अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया । शोध का मुख्य उद्देश्य नवोदय तथा केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मक विभिन्नता का पता लगाना था ।

अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा सर्वे विधि द्वारा कर्नाटक राज्य के केन्द्रीय विद्यालय तथा जवाहर नवोदय विद्यालय को शामिल करते हुए स्तरीकृत न्यायदर्श विधि से 770 नमूने का चयन करके आकड़ों के जांच से पाया गया कि -

जवाहर नवोदय विद्यालय के बच्चे केन्द्रीय विद्यालय के बच्चे की तुलना मे अधिक सृजनात्मक होते हैं ।

जवाहर नवोदय विद्यालय के लड़के ,लड़किया सृजनात्मकता के आधार पर भिन्न नहीं है ।

केन्द्रीय विद्यालय के लड़के ,लड़कियों की तुलना मे अधिक सृजनात्मक पाए गए ।

जवाहर नवोदय विद्यालय की लड़कियाँ केन्द्रीय विद्यालय की लड़कियों से ज्यादा रचनात्मक देखने को मिली ।

अध्ययन का परिसीमन :

वर्तमान शोध को निम्नलिखित के संदर्भ में परिसीमित किया गया था -

- यह शोध उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद तक सीमित है ।
- यह शोध माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 12 तक सीमित है ।
- यह अध्ययन सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के शहरी व ग्रामीण विद्यालय तक सीमित है ।
- इस शोध में सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों से कुल 100 न्यायदर्श लिया गया ।
- इसमे शहरी विद्यालय से 50 एवं ग्रामीण विद्यालय से 50 न्यायदर्श को लिया गया ।
- 50 शहरी विद्यालय के छात्रों में 25 लड़के एवं 25 लड़कियाँ शामिल थी ।
- 50 ग्रामीण विद्यालय के छात्रों में 25 लड़के एवं 25 लड़कियाँ शामिल थी ।

- अध्ययन में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।
- उपकरण के रूप में बाँकर मेहदी का शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का उपयोग किया गया।

शोध की कार्य प्रणाली :

अध्ययन विधि : इस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शोधविधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इसके द्वारा न्यायदर्शो से मिलकर अध्ययन किया गया है जिससे वास्तविक आकडे शोध के लिए प्राप्त हो सके।

शोध उपकरण : अनुसंधान में शोधार्थी द्वारा मऊ जनपद के सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के कक्षा 12वी के शहरी व ग्रामीण छात्रों में सृजनात्मकता के विकास में लिंग व स्थानीय संस्थाओं के प्रभाव के मापन के लिए उपकरण के रुप में बाँकर मेहदी द्वारा निर्मित शाब्दिक रचनात्मक चिंतन परीक्षण का प्रयोग किया गया इसमें मुख्यतः चार तरह के रचनात्मक कार्यों को शामिल किया गया।

न्यायदर्श : अध्ययन में मऊ जनपद के सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के माध्यमिक विद्यालय से कक्षा 12 के 100 छात्रों को ,जिसमें 50 शहरी व 50 ग्रामीण छात्रों को साधारण यादृच्छिक विधि से चयन करके नमूने के रूप में शामिल किया गया। जिले में सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के 12 वी के विद्यालयों की सूची तैयार करके चार विद्यालयों को रैंडम तरीके से चुना गया जिसमे शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय शामिल थे।

सांख्यिकीय विश्लेषण : इस अध्ययन में शोधकर्ता ने जनसंख्या से चुने गए नमूने के मापन से प्राप्त आकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मानक विचलन ,मध्य और टी परीक्षण का उपयोग किया गया।

प्रदत्तो के संग्रह की प्रक्रिया :शोध में न्यायदर्श का चयन शोधकर्ता द्वारा करने के पूर्व विद्यालय के प्राचार्य से व्यक्तिगत संपर्क करके अध्ययन हेतु उनसे अनुमति प्राप्त किया गया। तत्पश्चात न्यायदर्श का चुनाव कक्षा 12 के शहरी व ग्रामीण बच्चों को लिया गया। इसके उपरांत न्यायदर्श से मापन के द्वारा आकड़ों का संग्रह उपयुक्त दिशानिर्देश देते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा बाँकर मेहदी के द्वारा निर्मित शाब्दिक रचनात्मक चिंतन परीक्षण से किया गया।

परिणाम और चर्चा :

न्यायदर्श से प्राप्त आकड़ों के जांच के उपरांत यह प्राप्त हुआ कि सीबीएसई बोर्ड के माध्यमिक विद्यालय मे अध्ययन करने वाले शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की सृजनात्मकता को धनात्मक रूप से प्रभावित करती है। शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्रों से अधिक देखने को मिली।

परिणामतः शहरी छात्रों मे सृजनात्मक अधिक देखने को मिला। छात्रों की सामाजिक आर्थिक ,बौद्धिक ,का भी प्रभाव सार्थक रूप से देखने को मिला। शहरी छात्रों की स्थिति ग्रामीण छात्रों से अच्छी होने के कारण सामान्यतः इनकी बौद्धिक स्थिति भी अच्छी होती है। जबकि लैंगिक विभेद, तथा स्थानीय संस्थाओ का सृजनात्मकता के विकास मे कोई सार्थक अंतर देखने को नहीं मिला। अतः लिंगभेद व स्थानीय संस्था माध्यमिक विद्यालय के शहरी व ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता के विकास को प्रभावित नहीं करती हैं।

निष्कर्ष : अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह पाया गया कि सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता का विकास बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि ,आर्थिक स्थिति ,बौद्धिक स्तर ,तथा सामाजिक स्तर पर निर्भर करती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों में सृजनात्मकता का विकास तेजी से होता है इसलिए जिन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी थी उनमे सृजनात्मकता अधिक पाई गई। आर्थिक स्थिति रचनात्मकता के विकास मे महत्वपूर्ण चर है। आर्थिक रूप से मजबूत छात्रों में सामान्यतः आर्थिक रूप से कमजोर ,अस्वस्थ ,छात्रों की तुलना मे अधिक रचनात्मकता के विकास के अवसर प्राप्त होते हैं।

भावी शोध के लिए सुझाव :

शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर आने वाले समय में निम्न विंदुओं पर शोध कार्य किए जा सकते हैं -

- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सृजनात्मकता के विकास में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में रचनात्मकता एवं अभिरुचि के संबंध का अध्ययन करना।
- छात्रों में सृजनात्मक चिंतन एवं विद्यालयी गतिविधि के संबंध का अध्ययन करना।
- सामान्य छात्रों तथा विकलांग छात्रों में रचनात्मक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भ :

- मान ,जी0 एस0. (1978).सृजनात्मक तथा असृजनात्मक विद्यार्थियों के मूल्य आदर्शों का अध्ययन, वॉल्यूम 1,एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, पृष्ठ -497
- बरार,एस0 एस0. (1991). विद्यालयी छात्रों मे वृद्धि के आधार पर सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन , एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, पृष्ठ-830
- गौतम,शशि. (1992). नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन तथा नेतृत्व की भावना का विकास के विषय मे अध्ययन,पी0 एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र) ,

- मंगल, एस 0 के 0. (2013). शिक्षा मनोविज्ञान, पी0 एच0 आई0 प्राइवेट लिमिटेड, पेज - 366
- गुप्ता ,एस0 पी0 .,गुप्ता ,अलका. (2017). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार ,शारदा पब्लिकेशन ,पृष्ट 602-603.
- श्री अस्तुतिक,सुदार्ति., नुराइनी, लैलातुल.(2017). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए वैज्ञानिक रचनात्मकता कौशल में सुधार के लिए वैज्ञानिक रचनात्मकता परीक्षण का विकास करना,वॉल्यूम 4 ,अंक 9 ,द इन्टरनैशनल जर्नल ऑफ साइंस एण्ड ह्युमिनिटी इनवेंसन .
- एन0 सी0,किरण. (2017). केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय के छात्रों के मध्य सृजनात्मकता का अध्ययन, वॉल्यूम-4,द इन्टरनैशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकालजी.